चाय
पढ़ना है समझना

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सेट)
978-81-7450-886-7

*बरखा* क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। *बरखा* पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।



**प्रथम संस्करण** : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

**पुनर्मुद्रण** : दिसंबर 2009 पौष 1931



**PD 10T NSY**

## पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

**सदस्य-समन्वयक** – लतिका गुप्ता

**चित्रांकन** – निधि वाधवा

**सज्जा तथा आवरण** – निधि वाधवा

**डी.टी.पी. ऑपरेटर** – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

## आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलेपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

## राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

**एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय**

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

**प्रकाशन सहयोग**

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम गांगुली

चाय
मदन
जमाल

एक दिन जमाल को जुकाम हो गया।
वह सुबह से छींक रहा था।
उसकी नाक भी बह रही थी।

जमाल का मन चाय पीने का हुआ।
रोज़ की तरह मदन उसके घर पर ही था।
जमाल ने उससे कहा कि चाय पीने का मन हो रहा है।
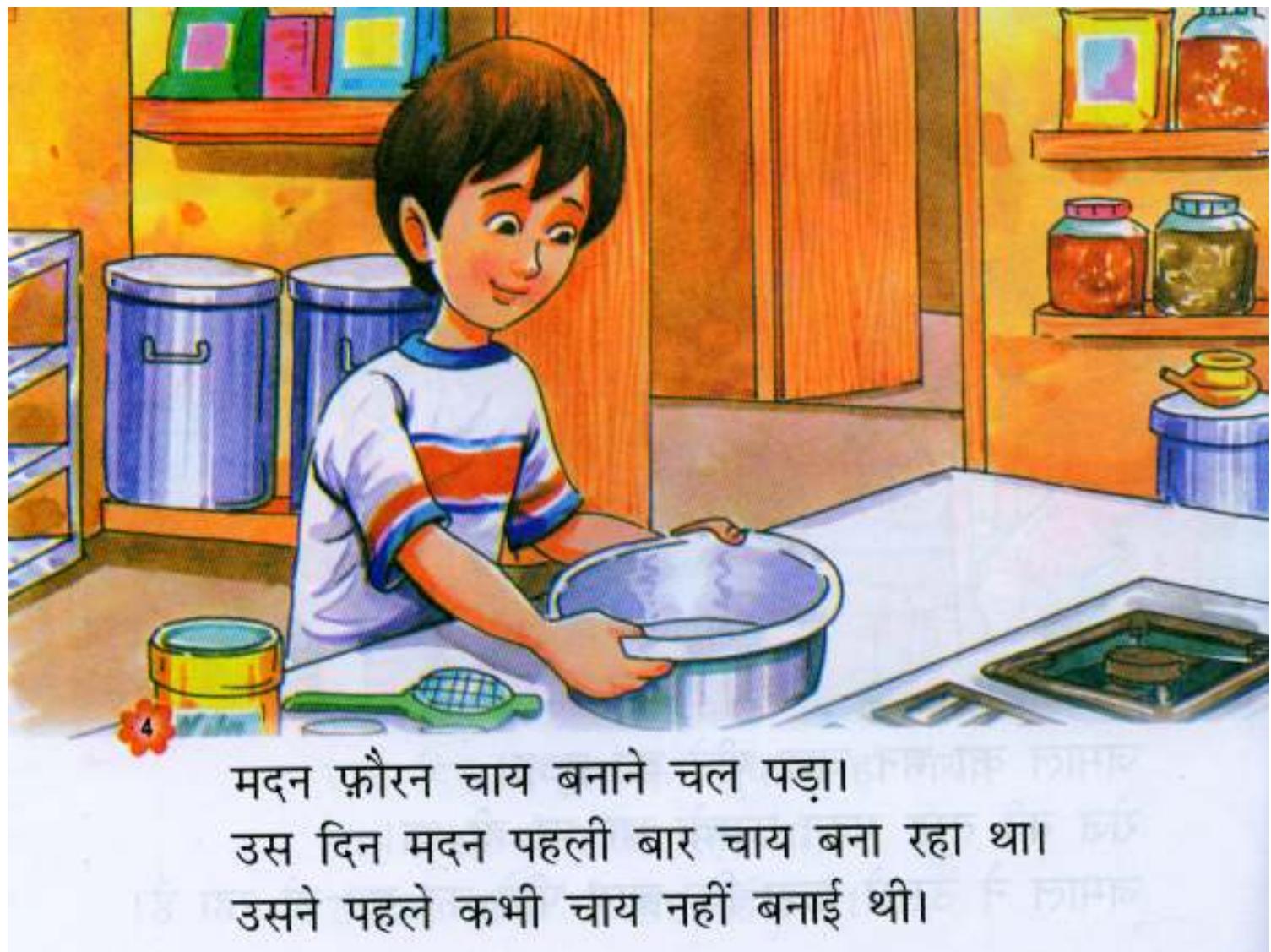
मदन फ़ौरन चाय बनाने चल पड़ा।
उस दिन मदन पहली बार चाय बना रहा था।
उसने पहले कभी चाय नहीं बनाई थी।

मदन ने पतीले में दो प्याले पानी डाला।
उसने पानी में दो लौंग डालीं।
फिर मदन ने पानी उबलने रख दिया।

6

मदन ने खूब सारा अदरक डाला।
पानी में लौंग और अदरक खूब देर तक उबाले।
मदन उनको उबलते हुए देखता रहा।

फिर उसने पतीले में आधा प्याला दूध डाला।
मदन ने उबलते हुए पानी में दो चम्मच चीनी डाली।
उसने पानी में दूध डालकर खूब देर उबाला दिया।

इसके बाद खूब सारी चाय की पत्ती डाली।
मदन ने पत्ती डालकर चाय को खूब उबाला।
चाय का रंग खूब गाढ़ा हो गया था।

मदन ने चाय दो गिलासों में छानी।
उसने दोनों गिलासों में चाय बराबर डाली।
चाय थोड़ी कम थी।

मदन ने चाय के गिलास एक थाली में रख लिए।
वह बड़े प्यार से जमाल के लिए चाय लेकर आया।
उसने बड़े प्यार से जमाल को चाय दी।
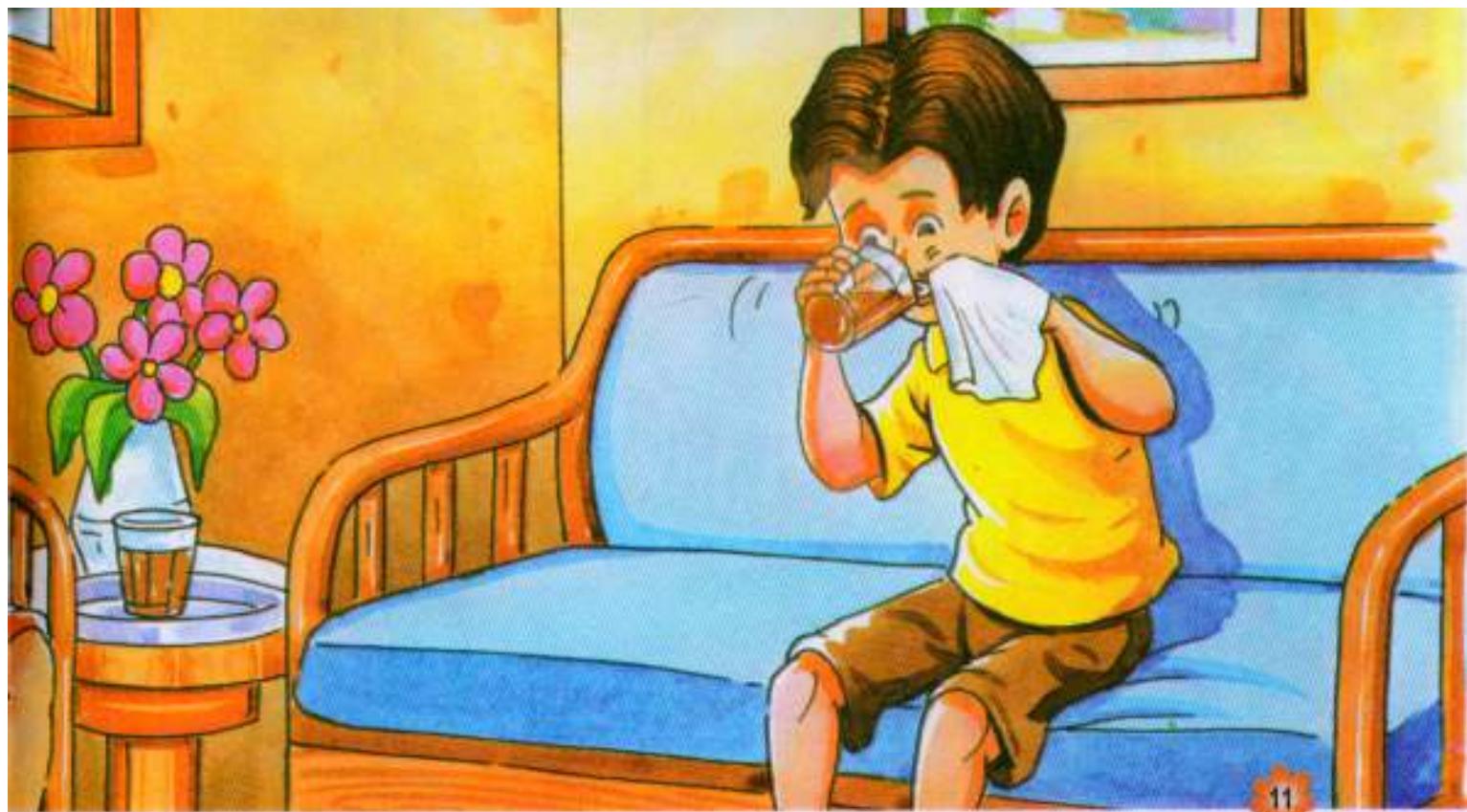
जमाल की नाक अब भी बह रही थी।
उसने चाय का गिलास हाथ में लिया।
जमाल ने नाक पोंछते हुए चाय का एक घूँट पीया।

जमाल ने सारी चाय थूक दी।
चाय बहुत कड़वी थी।
वह बोला कि चाय है या कड़वी दवा।
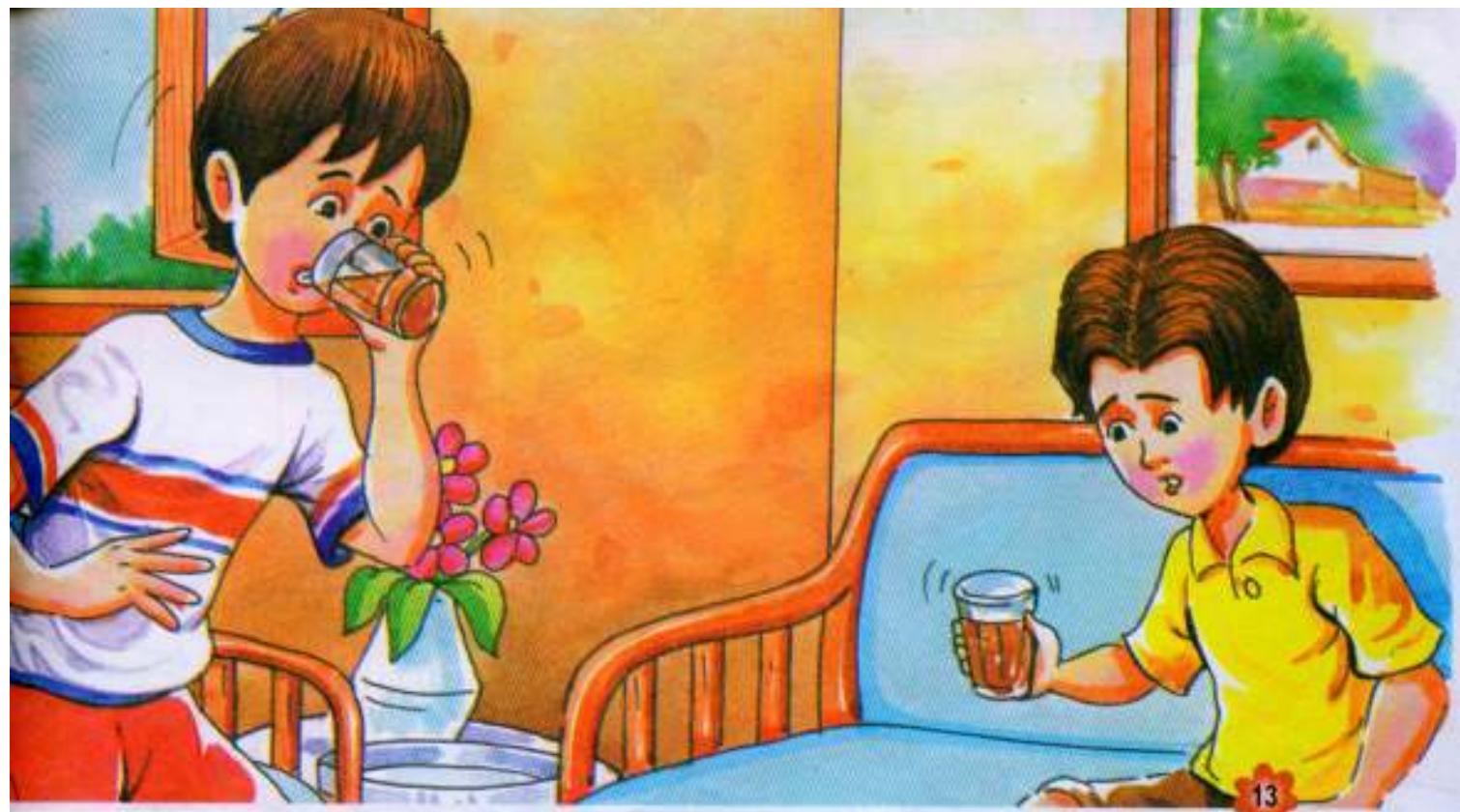
मदन ने भी चाय पीकर देखी।
चाय में चीनी कम थी।
अदरक और पत्ती बहुत ज़्यादा डल गई थी।

मदन ने दोनों की चाय वापस पतीले में डाली।
उसने चाय में चीनी और दूध डाला।
चाय को फिर से उबलने रख दिया।

अब चाय का रंग हल्का हो गया था।
मदन ने चम्मच से निकाल कर चाय चखी।
चाय अब अच्छी हो गई थी।

वह जमाल के लिए दोबारा चाय लेकर आया।
जमाल को इस बार चाय अच्छी लगी।
उसने मदन की चाय भी अपने गिलास में डाल ली।

2085

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING